DELHIIN/2007/20081 Date of Publication: 13/02/2020 G-3/DL(N)/202/2019-21

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–13 अंक–9 फरवरी 2020 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

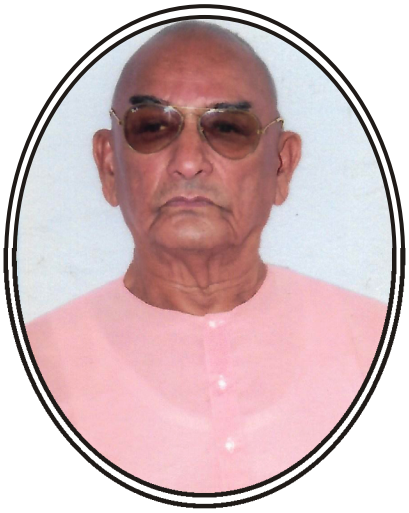

तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानंद जी

संस्थापकः

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल (रजि. सं. S/20762)

सत्संग भवन – सी॰एस॰/ओ॰सी॰एफ॰ नं॰ 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85

मो॰ : 9810344596, 011–27574151

ई–मेलः atmagyanp@gmail.co,

वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.com

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

इस अंक में प्रकाशितः–

1. गुरू कृपा के बिना सच्चे सन्त का सान्निध्य नहीं मिलता है।
2. गुरू की आज्ञा का पालन करने वाला सेवक ही गुरू मुख होता है।
3. गुरू का सुमरन करने से माया मोहित नहीं करती है।
4. जीव में रूहानी गुरू की शक्ति बीज में छिपे पेड़ की भाँति अदृश्य रहती है।
5. अध्यात्म ज्ञान की सेवा से बढ़कर अन्य कोई सेवा नहीं है।
6. अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग–1)

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः– चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.com है

सम्पादकीय

रुहानी गुरू आनन्द के दाता शाश्वत् दण्डवत् प्रणाम!!!

गुरूकृपा के बिना सच्चे सन्त का सान्निध्य नहीं मिलता है

सन्त चलता–फिरता प्रयागराज होते हैं उनके पास ज्ञान की त्रिवेणी होती है जिसमें स्नान करने से मानव बाहर एवं भीतर से पवित्र हो जाता है। पवित्र होने पर उसका गुरू से मिलन हो जाता है। इसलिए कहा गया है कि–

सन्त समागम तीर्थराज, गुरू मिलन का यही दरवाजा।

सन्त ज्ञान की त्रिवेणी में स्नान करने का सही तरीका सत्संग के माध्यम से मानव मात्र को समझाने का प्रयास करते हैं। वे मानव को सामान्य जीवन जीने के बजाय वास्तविक जीवन जीने की कला सिखाते हैं। सच्चे सन्त का सान्निध्य गुरू की कृपा के बिना नहीं मिलता है। सन्त का मिलन होने पर परमात्मा से मिलने में देरी नहीं लगती है क्योंकि वे परमात्मा के भेदी होते हैं। सच्चे सन्त का संग मानव के जीवन को पूर्ण रूप से बदल देता है इस बदलाव का अनुभव मानव को ज्ञान होने के बाद अपने अन्दर स्वयं होने लगता है। सन्तों के द्वारा ऐसा सुना जाता है कि पारस का स्पर्श होने से काला लोहा भी चमकीला सोना बन जाता है परन्तु पारस में भी वह गुण नहीं होता है कि वह लोहे को तो क्या, सोने तथा हीरे को भी अपने जैसा बना सके परन्तु सच्चे सन्त का सान्निध्य साधारण से मानव को भी अपने जैसा सन्त बना देते हैं, उनमें महापापी को भी पावन बना देने की सामर्थ्य होती है सन्त समागम मानव में यह बदलाव सहजता से ही ला देता है उनका समागम कुमार्ग पर चलने वाले मानव को भी महामानव ही नहीं बल्कि देवताओं के द्वारा भी पूजने योग्य परम सन्त के रूप में बदल देता है। सच्चे सन्त गुरू सेवा में निरन्तर लगे रहते हैं। अतः उन पर गुरू की कृपा हमेशा बरसती रहती है। वे गुरू की आज्ञा में जीवन का बलिदान करने में हमेशा तत्पर रहते हैं। गुरू की कृपा से सत्य ज्ञान की चर्चा करते हुए ज्ञान के द्वारा मानव समाज को जगाने का कार्य निरन्तर करते रहते हैं। वे अपने जीवन को पूर्ण रूप से गुरू को समर्पित करते हुए उन्हीं की साधना में लगे रहते हैं और उनके ज्ञान की अमृत खुशबु को संसार में फैलाते रहते हैं। सन्त की उपमाएँ अनेक संसारी पदार्थों से की गयी है। परन्तु वे सभी उपमाएँ अपने आप में अपूर्ण हैं चाहे उन्हें नवनीत के समान बताया गया हो या उन्हें चन्दन के समान बताया गया हो अथवा पारस से उनकी समानता बतायी गयी हो या उन्हें बादल के समान परमार्थी कहा गया हो परन्तु ये सभी सच्चे सन्त की समानता नहीं कर सकते हैं। इनमें सन्त जैसा सामर्थ्य नहीं होता है क्योंकि सन्त परमात्मा के अध्यात्मिक सेवक होते हैं। वे भौतिक जगत में समाज को सत्संग देकर भौतिक सेवा तो करते ही हैं परन्तु अध्यात्मिक जगत में परमात्मा की निःस्वार्थ भाव से साधना करते हुए उनकी अध्यात्मिक सेवा भी करते हैं। वे संसार की दलदल में फंसे अज्ञानी मानव की दशा को देखकर द्रवित हो जाते हैं और ज्ञान से उनके जीवन को आनन्दमय बनाने का प्रयास करते हैं वे अन्दर बाहर से पूर्ण रूप में पवित्र होते हें उनकी वाणी में गुरू की वाणी घुली रहती है वे मानव की क्रोध रूपी अग्नि को ज्ञान अमृत से शान्त कर देते हैं। उनका वचन कभी मिथ्या नहीं होता है। जब गुरू की कृपा होती है तब सच्चे सन्त घर बैठे ही मिल जाते हैं परन्तु सामान्य व्यक्ति को गुरू की कृपा का आभास नहीं हो पाता है इसलिए वह घर पर आये सन्त का सत्संग भी श्रवण नहीं करता है इसलिए वह इस मानव जीवन में प्राप्त होने वाले परम आनन्द एवं परमशान्ति से वंचित रह जाता है।

गुरू की आज्ञा का पालन करने वाला सेवक ही गुरू मुख होता है

आज मैं सभी प्रेमी पाठकों को भौतिक गुरू एवं अध्यात्मिक गुरू की जानकारी दे रहा हूँ। सभी प्रेमी यह अच्छी प्रकार समझ लें कि भौतिक गुरू केवल दो आँखों से देखने वाले होते हैं। जबकि अध्यात्मिक गुरू अनन्त आँखों से देखने वाले होते हैं तथा भौतिक गुरू का जन्म–मरण होता रहता है परन्तु अध्यात्मिक गुरू अजन्मा एवं अविनाशी, तथा सत्य सनातन होता है। अध्यात्म ज्ञान का अनन्त भण्डार भी अध्यात्मिक गुरू के पास है। अन्दर की ज्ञान दृष्टि भी अध्यात्म गुरू ही खोलते हैं उन्हीं के पास मृत्यु से बचाने वाला अमृत है उनके अविनाशी शब्द में सुरति जोड़कर ही सुमरन होता है। अज्ञान अन्धकार को दूर करने वाला ज्ञान का प्रकाश भी उन्हीं से मिलता है। अनन्त क्लेशों एवं मुर्झावट को दूर करने वाली अनहद ध्वनि उन्हीं के शब्द से प्रकट होती है। अज्ञानी मानव के जीवन में जन्म जन्मान्तरों में किये गये दुष्कर्मों के संस्कार भरे रहते हैं जिस कारण से उसके विचार संकीर्ण रहते हैं तथा उसमें विवेक का भी अभाव रहता है परन्तु जब मानव अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त कर लेता है तब उसके अन्दर ब्रह्म सूर्य का उदय हो जाता है जिससे उसके अन्धकारमय जीवन में उजाला हो जाता है। जब उसके जीवन में ब्रह्म अमृत प्रकट हो जाता है तब उसके जीवन की समस्त पापरूपी गन्दगी धुल जाती है उसका अन्तःकरण स्वच्छ एवं पवित्र हो जाता है। जीवात्मा को यह ब्रह्मज्ञान अविनाशी गुरू ही दे सकता है जिस प्रकार से भयंकर रोग का आप्रेशन डाक्टर करता है और कम्पाउन्डर पट्टी आदि बाँधने का काम करता है। उसी प्रकार मानव को मृत्युरोग से बचाने के लिए ज्ञान अविनाशी गुरू ही देते है। जिससे उसके ज्ञान चक्षु खुल जाते हैं। बाहर से महात्मा जी जिज्ञासु को ज्ञान पहुँचाने में गुरू की सेवा का कार्य करते हैं। उसे साधन की विधियाँ बताते हैं। जब साधक के अन्दर ज्ञान प्रकट हो जाता है तब वह अपने अन्दर छिपी दिव्य शक्तियों को देखने में समर्थ हो जाता हे। जब मानव के जीवन के अन्दर धर्म की स्थापना हो जाती है तब जीवात्मा धर्मात्मा बनती है। गुरू की आज्ञा सेवक को प्रेरणा के रूप में अन्दर से ही मिलती रहती है जो सेवक गुरू की प्रेरणा को आज्ञा मानकर उसका पालन करता है वही सेवक गुरू मुख कहलाता है। सन्त अविनाशी गुरू के सच्चे सेवक होते हैं। वे भली–भाँति जानते हैं कि गुरू से कोई बात छिपायी नहीं जा सकती है क्योंकि वे अनन्त आँखों से देखने वाले हैं। जब सन्त किसी जिज्ञासु को बाहर से ज्ञान का साधन बताते हैं तब भीतर से गुरू ही जिज्ञासु के लिए ज्ञान का भण्डार खोल देते हैं इस प्रकार जिज्ञासु धन्य–धन्य हो जाता है। गुरू ज्ञान का सागर होते हैं उनका ज्ञान कभी कम नहीं होता है जैसे किसी छोटे तालाब में समुद्र का स्रोत निरन्तर गिरता रहता है तो उसका

जल कभी कम नहीं होता है जैसे समुद्र से बादलों द्वारा कितना भी जल उठा लिया जाये तब भी उसका जल तनिक भी कम नहीं होता है वैसे ही जितनी जीवात्माओं को गुरू का ज्ञान मिल जाता है उनके जीवन के अन्दर ब्रह्मसागर से ब्रह्म ज्ञान का स्रोत मिल जाता है यह सत्य ज्ञान का भण्डार अथाह है। शरीर को गुरू मानना मानव की भारी भूल है जब तत्वदर्शी सन्त मानव का ज्ञान से सम्पर्क जोड़ते हैं तब अपनी योग शक्ति से जिज्ञासु के अन्दर सन्त उच्च अविनाशी गुरू की शक्ति का अनुभव करते हैं। गुरू ही सन्त के मुख से सत्संग वर्षा करते हैं सत्संग सुनकर ही मानव की भावना ज्ञान प्राप्त करने के लिए जागरूक होती है सारी रूहानी सम्पत्ति गुरू के ही पास है वे अपने रूहानी सेवकों को उस अध्यात्म सम्पत्ति का हकदार बना देते हैं क्योंकि हम सभी रूहानी गुरू की अंशी आत्मा रूपी 'रूह' है हम सभी का परमात्मा एक ही है इसलिए हम सभी को आपसी वैरभाव एवं द्वेष की भावनाओं का त्याग करके एक सूत्र में बंध जाना चाहिए। गुरू ही हमारे परमपिता हैं और परमपिता ही हमारे गुरू हैं। भीतर से गुरू ही सेवक को प्रेरणा देते हैं। महात्मा जी सेवकों को सत्संग में गुरू की मर्यादा सिखाते हैं इसलिए महात्मा जी की आज्ञा ही गुरू की आज्ञा है। सन्त ही गुरू सेवा में अपना बलिदान करते हैं तथा प्रेमी सेवकों को भी सेवा के लिए प्रेरित करते हैं। गुरू महाराज निस्वार्थ सेवा से प्रसन्न होते हैं सेवा से ज्ञान में निरन्तर वृद्धि होती है और अन्दर से निस्वार्थ प्रेम प्रकट होता है। ज्ञान से सत–रज–तम की तपन बुझती है। ज्ञान से ही सेवक अपने अन्दर अनेक दिव्य शक्तियों का अनुभव करता है।

भजन

गुरूद्वारे में गुरू मुख की, करलो तुम पहचान।
उनकी सुरक्षा में रहते हैं, रूहानी गुरू महान।।
गुरूद्वारे में मिलकर आओ, तजकर सब अभिमान।
ज्ञान से अपने जीवन की करलो सच्ची पहचान।।
सत्संग में सन्त से मिलता, सबको आत्म ज्ञान।
श्रद्धा सेवा सत्संग से तू, करले अमृत पान।।
गुरू सेवा से गुरू मुख बनते, सच्ची करके मान।
गुरू सेवक ही गुरू सेवा में, करते जीवन बलिदान।।
गुरू प्रेम में गुरूमुख रोते हैं, करते गुरू का ध्यान।
गुरूमुख कभी नहीं मरते हैं, उनमें रहता है पूर्ण ज्ञान।।
गुरूमुख आज्ञा में रहते हैं, गुरू का करें सम्मान।
चेतन योगी गुरू कृपा से, पाया पद निर्वाण।।

गुरू का सुमरन करने से माया मोहित नहीं करती है

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा ही गुरू है। उनके रूहानी प्रकाश से सारा जग प्रकाशित हो रहा है। यदि उस रूहानी गुरू का सुमरन मानव निरन्तर करता रहे तो उसे माया मोहित नहीं कर सकती है और उसके जीवन में आने वाले सभी विध्न समाप्त हो जाता हैं कहा गया है कि–

गुरू के सुमरन मात्र से, नाशत विध्न अनन्त।
ताते सर्व आरम्भ में, ध्यावत है सब सन्त।।

उस रूहानी गुरू की प्रेरणा साधक को जीवन में पग–पग पर मिलती रहती है। वे साधक के अन्दर बैठे उसका मार्ग दर्शन करते रहते हैं। परमात्मा के इस कार्य को हर मानव समझ नहीं पाता है। सामान्य जीव में इतना सामर्थ्य नहीं होता है कि वह अपने समस्त प्रारब्धों को काट सके। केवल रूहानी गुरू में ही वह शक्ति होती है जो उसे समर्पित व्यक्ति के समस्त भोगों और पापों को काटकर उस पर कृपा कर सकते हैं। यदि व्यक्ति में अपने पापों का प्रायश्चित करने का साहस आ जाये तो देखते ही देखते उसका जीवन बदल जाता है। वे व्यक्ति वास्तव में ही सौभाग्यशाली होते हैं। जिन्हें तत्वदर्शी सन्तों की शरण में आकर रूहानी गुरू से मिलने का सुअवसर प्राप्त होता है। जो केवल शारीरिक आवश्यकताओं और सुविधाओं के जुटाने में लगे रहते हैं या अपने अहंकार के कारण परम दयालु रूहानी गुरू को समर्पित नहीं होते हैं वे निश्चित ही अपना अहित करने में लगे रहते हैं। मानव की यह मान्यता निराधार है कि सुख बाहरी साधनों में है यदि ऐसा होता तो आज अनेक प्रकार के साधनों से सम्पन्न व्यक्ति सबसे अधिक सुखी होते। परन्तु ऐसा नहीं है आज साधन सम्पन्न व्यक्ति अधिक अशान्त दिख रहा है। यह मन बर्हिमुखी होकर मानव के सदाचरण में विक्षेप उत्पन्न करता है। जिससे मानव पापाचार में लग जाता है और वास्तविक आनन्द से वंचित रह जाता है। रूहानी गुरू के सुमरन में जो आनन्द है वह सांसारिक कामनाओं व वासनाओं में नहीं मिल सकता है। गुरू का सुमरन करने से हमारा दृष्टिकोण सामाजिकता से ऊपर उठकर अध्यात्मिकता की ओर बदलने लगता है तथा हमारे कर्म

निष्काम में परिवर्तित होने लगते हैं और जीवन पूरी तरह बदल जाता है। जो केवल गुरू का सहारा ही सच्चा सहारा मानते हैं उनकी दशा एवं दिशा पूर्णरूप से बदल जाती है उसका स्वार्थी जीवन निस्वार्थी हो जाता है। गुरू परमात्मा का कल्याणकारी स्वरूप है। गुरू ही अन्दर से ज्ञान देकर मानव का कल्याण करता है। मानव को ज्ञान के बिना अपने सच्चे स्वरूप का भी पता नहीं चलता है। जब साधक गुरू का सुमरन करता हुआ उसके ध्यान में तन्मय हो जाता है उसको अपने अन्तःकरण में गुरू का कल्याणकारी स्वरूप परिलक्षित होता है। जब साधक गुरू की ज्योति का दर्शन करता है तब साधक के जीवन में छाया मोह अन्धकार दूर हो जाता है। रूहानी गुरू ही प्रकृति की गुलामी से मुक्त करते हैं। यह प्रकृति ही उसकी माया है। सुमरन करने से मानव के अन्दर पनपने वाले सभी विकार समाप्त हो जाते हैं वह अन्दर से पवित्र हो जाता है। अतः जो व्यक्ति रूहानी गुरू का निरन्तर सुमरन करता है उसे माया मोहित नहीं करती है वह इस भवसागर को आसानी से तर जाता है।

भजन

श्वांस के अन्दर सोहं सोहं, एक ध्वनि निरन्तर गरज रही।
मेरे योग साधन में ज्ञान की अग्नि, धीरे–धीरे सुलग रही।।
सोहं की झंकार को सुनकर, मोह की निद्रा भाग गयी।
मेरी सुरति सुहागन अमृत पीकर, मोह निद्रा से जाग गयी।।
साधन करके घट के अन्दर, ज्ञान की बिजली चमक रही।
गगन मण्डल से अनहद धुन में, ज्ञान की बांसुरी बाज रही।।
जीवन बाग की फुलवारी में, अमृत वर्षा बरस रही।
भंवरा फूल में बैठ रहा है, जिसमें खुशबु महक रही।।
परम पुरूष के दर्शन खातिर, सुरति हमारी तरस रही।
उनसे अमीरस पीने खातिर, नीयत हमारा बहक रही।।
सत्संग में गुरू की कृपा, सत्संग सबको सुना रही।
चेतन योगी योग साधन से, ज्ञान की गगरी छलक रही।।

जीव में रूहानी गुरू की शक्ति बीज में छिपे पेड़ की भांति अदृश्य रहती है

इस संसार में सभी जीव प्राणी चलते–फिरते एवं अनेक कार्य करते हुए दिखायी देते हैं परन्तु वे सभी इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं कि उन्हें अन्दर से कौन सी शक्ति चला रही है। जैसे हमारा प्राण चक्र निरन्तर घूम रहा है परन्तु यह जिस शक्ति से घूम रहा है वह शक्ति दिखायी नहीं देती है। वह रूहानी गुरू की ही अदृश्य शक्ति है जो हमारे अन्दर बीज में छिपे पेड़ की भांति अदृश्य रहती है उसे इन आँखों से नहीं देखा जा सकता है। जैसे किसी व्यक्ति ने केवल बीज ही देखा हो उसने बीज में से अंकुरित होने वाला पेड़ न देखा हो तो वह बीज को बीज ही कहेगा परन्तु जिसने मिट्टी में बोकर व खाद पानी देकर बीज से पेड़ अंकुरित होता हुआ देखा हो वह कहेगा कि बीज है और पेड़ भी है। इसी प्रकार हमें अज्ञानमय जीवन कुछ मालूम नहीं पड़ता है कि यह सारी सृष्टि का खेल किस कारीगर की कारगिरी से हो रहा है। ज्ञानमय जीवन में ही यह अनुभव होता है कि जिस शक्ति से यह सारा खेल हो रहा है वह शक्ति सत्य, सनातन अखण्ड एवं अचल है। यह अचल शक्ति एक झूले के खम्भे के समान है जिस पर अनेक झूले लटके हुए हैं। जिस प्रकार एक खम्भे पर अनेक झूले लटके होते हैं उनमें झूलने वाले व्यक्ति झूलों में झूलते रहते हैं परन्तु वे इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं कि ये झूले किसके सहारे घूम रहे हैं। झूलों की तरह ही रूहानी गुरू की अदृश्य शक्ति से अनन्त सृष्टियाँ घूम रही हैं इन सृष्टियों का निरन्तर उत्पत्ति एवं प्रलय होता रहता है। फिर भी वह अचल शक्ति दिखायी नहीं देती है। उस शक्ति का अनुभव इस प्रकार किया जा सकता है जैसे एक बीज है उसे पृथ्वी में बोने पर उसमें से अंकुर निकलता है जो खाद–पानी द्वारा विकसित होकर एक विशाल वृक्ष बन जाता है उस पर फूल लगते हैं उन फूलों से फिर फल बनते हैं तथा फल में फिर बीज बनता है तो लोग कहते हैं कि पेड़ बड़ा हुआ अथवा बीज। वास्तव में पेड़ का सारा अस्तित्व बीज में ही छिपा रहता है। बीज में छिपी वह अदृश्य शक्ति बीज के अंकुरित होने पर

पेड़ में चली जाती है बीज का कवच नीचे ही रह जाता है। बीज में छिपी वही शक्ति पेड़ में पहुँचकर विशाल तने शाखाओं, पत्तों, फूलों और फलों में संचारित होकर उन्हें विकसित करती है और वही शक्ति फल के अन्दर बीज में पहुँच जाती है इस प्रकार बीज से पेड़, पेड़ से फल और फल से पुनः बीज बनने की प्रक्रिया निरन्तर चल रही है। रूहानी गुरू की इस अदृश्य शक्ति से ही सभी जीवों के शरीरों का निर्माण होता है। उनका संचालन एवं अन्त होता रहता है। यही रूहानी गुरू की वह अदृश्य शक्ति है जो इन बाहरी आँखों से दिखायी नहीं देती है परन्तु इसे ज्ञान साधन के द्वारा अनुभव किया जा सकता है गुरू की यह अदृश्य शक्ति धर्म क्षेत्र एवं अधर्म क्षेत्र दोनों को प्रकाशित करती है इस शक्ति को केवल निष्काम ज्ञान से अनुभव किया जा सकता है। गुरू की यह शक्ति जीव के श्वाँस में होने वाले शब्द में छिपी होती है इसी शब्द की शक्ति से जीवात्मा अधर्म क्षेत्र से धर्मक्षेत्र में प्रवेश करती है। इसी शक्ति से जीवात्मा धर्मात्मा बनती है। धर्मात्मा बनने पर ही सेवक में अमृत, दया एवं निस्वार्थ प्रेम प्रकट होता है। यह अदृश्य शक्ति ही सभी जीवों के जीवन का आधार है। इस शक्ति से ही पतित पावन बनते हैं इसके सहारे से ही निष्काम कर्म करते हुए निष्काम योगी अपने जीवन की मंजिल को प्राप्त करते हैं।

भजन

रूहानी गुरू है प्यारा प्रेमी, रूहानी गुरू है प्यारा रे।
रूहानी गुरू ही परमपिता है, जरा मन में विचारा रे।।
रूहानी रूहों का धाम यही है, रूहानी घर है हमारा रे।
इन आँखों की पहुँच नही है, तीनों लोको से न्यार रे।।
अजन्मा अविनाशी घट–घट वासी, रूहानी गुरू अति प्यारा रे।
रूहानी गुरू के निस्वार्थ प्रेम को, कोई पावे गुरू का प्यारा रे।।
विश्व विधाता ज्ञान के दाता, प्रेम दया भण्डारा रे।
रूहानी गुरू का ध्यान लगाओ, हो जाओ भव से पारा रे।।
चेतन योगी ध्यान में देखे, अलौकिक खेल अपारा रे।
तुम भी प्रेमी साधन करलो, मिल जाये मोक्ष द्वारा रे।।

अध्यात्म ज्ञान की सेवा से बढ़कर अन्य कोई सेवा नही है

इस सृष्टि में सबसे उच्च कोटि का ज्ञान अध्यात्म ज्ञान है। इस अध्यात्म ज्ञान की सेवा से बढ़कर अन्य कोई सेवा भी नहीं है। यह अध्यात्म ज्ञान मानव के अन्दर गुप्त रूप है। परमात्मा ने सभी जीव प्राणियों के खाने–पीने की व्यवस्था उनके स्वभाव के अनुसार की है और उनके शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जड़ी–बूटियों को भी पैदा किया है। मानव जन्म के उद्देश्य की पूर्ति अध्यात्म से ही होती है। जो मानव अज्ञान अन्धेरे में डूब जाता है उसके अन्दर यह अध्यात्म ज्ञान प्रकाश भर देता है। जिस मानव की विचार धारा अपवित्र एवं विचलित हो जाती है उसे यह ज्ञान पवित्र एवं एकाग्र बना देता है। यह ज्ञान मानव की अचल सम्पत्ति है परन्तु यह अज्ञानी मानव की नज़र में नहीं आती है। इस अचल सम्पत्ति का बोध मानव को समय के तत्वदर्शी सन्त एवं निष्काम कर्म योगी ही कराते हैं। इस अचल सम्पत्ति को प्राप्त कर मानव अधर्म क्षेत्र में होने वाली अधोगति से बचकर धर्मात्मा बन जाता है और उसका सारा अज्ञान अन्धकार समाप्त हो जाता है। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करती हुई जीवात्मा जब कर्म–प्रधान मनुष्य योनि में आती है तब उसे अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त होता है यदि मानव इस अवसर को हाथ से निकाल देता है उसे ज्ञान के बिना अधोगति प्राप्त होती है और जो मानव इस सुअवसर में निष्काम योगी से ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह व्यक्ति साधन–भजन करके वीरगति को प्राप्त होता है। इस ज्ञान का सच्चा बोध कराने के लिए सन्त मानव की ज्ञान दृष्टि खोल देते हैं क्योंकि इन आँखों से केवल संसार को ही देखा जा सकता है आत्म बोध के लिए ज्ञान दृष्टि की आवश्यकता होती है। सच्चे सन्त की ज्ञान दृष्टि, पंच दृष्टि, योगदृष्टि सभी सूक्ष्म से अति सूक्ष्म तत्वों को देखने के लिए खुली रहती है। गुरू की कृपा दृष्टि से वे सभी मानवों का कल्याण करने में समर्थ होते हैं। समाज भले ही सन्त के विपरीत बोले तब भी वे समाज का हित ही चाहते हैं क्योंकि कहा गया है कि–

सन्त न छोड़े सन्तई, चाहे कोटिक मिले असन्त।
चन्दन भुजंगा बैठिया, तहुं शीतलता न तजन्त।।

अर्थात सच्चे सन्त अपनी साधुता का कभी परित्याग नहीं करते हैं चाहे उन्हें करोड़ों दुश्मनों का सामना करना पड़े जैसे चन्दन अपनी शीतलता को नहीं छोड़ता है चाहे उस पर हज़ारों सर्प लिपटे हों। यह अध्यात्म ज्ञान स्वार्थी जीवन को निस्वार्थी बनाता है और उसके अन्दर दया, एवं निस्वार्थ प्रेम को प्रकट करता है। इस प्रकार इस अध्यात्म ज्ञान से श्रेष्ठ अन्य कुछ भी नहीं है और ज्ञान की सेवा से श्रेष्ठ अन्य कोई सेवा नहीं है। इस ज्ञान के अलावा चंचल मन को एकाग्र करने का कोई उपाय नहीं है। यह कलियुग काला युग है इसमें मानवों के अन्दर अज्ञान की कालिमा छायी हुई है फिर भी सच्चे सन्त लोगों को अज्ञान की कालिमा से बचाकर ज्ञान के प्रकाश में ला रहे हैं। यह कार्य वे निःशुल्क कर रहे हैं। ज्ञान से मानव का जवीन आदर्शमय बनता है। ज्ञान के लिए सच्चे सन्त का सान्निध्य अति आवश्यक है। उनके प्रति श्रद्धा एवं विश्वास अटूट होना चाहिए। उनकी सेवा करके सत्संग श्रवण करते हुए इस ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए एवं ज्ञान से अपने जीवन को पवित्र करते हुए मानव जीवन सफल बनाना चाहिए। कहा गया है कि–

न हि ज्ञानेन सदृशं किंचित, पवित्र मिह विद्यते।

अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी संस्था द्वारा तीन दिवसीय अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन ज्ञान माजरा केन्द्र की ओर से "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11 दिल्ली–85 में दिनांक 17.01.2020 से 19.01.2020 तक तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के मार्ग दर्शन में किया गया। जिसमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के विभिन्न केन्द्रों से साधक एवं साधिकाएँ सम्मिलित हुए। शिविर में प्रतिदिन दो पारियों में महात्मा जी द्वारा साधना का अभ्यास कराया गया। उन्होंने साधना की विधियों द्वारा अन्तःकरण को पवित्र करने का उपाय बताया। उन्होंने सत्संग में साधको को समझाया कि सबके स्वर में परमात्मा का शब्द छिपा है जो साधक शब्द में सुरति जोड़कर साधन करता है उसे संसार की माया मोहित नहीं करती है। हर जीव प्राणी के अन्दर रूहानी गुरू की शक्ति बीज में छिपे पेड़ की भांति अदृश्य रहती है। उसे सत्संग, सेवा एवं साधन से प्रकट किया जाता है गुरू की प्रेरणा साधक को अन्दर से मिलती रहती है जो साधक उस प्रेरणा को गुरू की आज्ञा मानकर उनकी मार्यादा के अनुसार साधन–भजन करता है वह साधक ही गुरू मुख बनता है ऐसे सेवक की सुरक्षा रूहानी गुरू हमेशा करते रहते हैं गुरू का उपकार सेवक को कभी नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने गुरू मुख सेवक की पहचान में एक भजन भी सुनाया। साधकों ने भी अपने आन्तरिक विचार सत्संग के माध्यम से प्रकट किये। महिला साधकों ने गुरू भक्ति के भजन सुनाकर सभी को भाव विभोर कर दिया। दिनाँक 20.01.2020 को प्रातः साधना एवं प्रसाद वितरण के बाद शिविर का समापन हुआ।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: "आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका "अध्यात्म सन्देश" तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के अध्यात्मिक उद्‌गारों का संकलन है। यह पत्रिका अध्यात्म ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिए प्रेरणा स्रोत है। इसका अध्ययन कर मानव अध्यात्म पथ पर अग्रसर होते हुए अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। यह पत्रिका जन–जन का कल्याण करने वाली सर्वोत्तम पत्रिका है।

– यशपाल सिंह सेवानिवृत कानूनगो (मु. नगर)

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में प्रकाशित अध्यात्म लेख एवं भजन उच्चकोटि के हैं उनकी बराबरी किसी अन्य सन्त से नहीं की जा सकती है।

– रामादेवी, विजय विहार (दिल्ली)

3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका से तत्वदर्शी सन्त की महानता का परिचय मिलता है उनके द्वारा लिखित अध्यात्म लेख एवं भजनों से यह मालूम होता है कि महात्मा जी सम्पूर्ण विश्व की जीवात्माओं को ज्ञान का सन्देश पहुँचाने के लिए रात–दिन कितने प्रयत्नशील रहते हैं।

– जगपाल यादव, धनपुर मवाना (मेरठ)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका प्रेमी साधकों के लिए अमृत वर्षा का कार्य करती है। जिससे साधकों में खुशहाली छा जाती है। साधक के आन्तरिक क्लेश एवं मुर्झावट सभी समाप्त हो जाते हैं यह आन्तरिक आनन्द प्रकट करने वाली पत्रिका है।

– विमलेश देवी ज्ञान माजरा (शामली)

G-3/DL(N)/202/2019-21

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी संस्था द्वारा तीन दिवसीय अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन ज्ञान माजरा केन्द्र की आरे से "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11 दिल्ली–85 में दिनांक 17.01.2020 से 19.01.2020 तक तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के मार्ग दर्शन में किया गया। जिसमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के विभिन्न केन्द्रों से साधक एवं साधिकाएँ सम्मिलित हुए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं महात्मा परम चेतनानन्द, चेतन योग आश्रम, सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी

मुद्रक : टैन प्रिन्ट्स इन्डिया प्रा. लि., रोहद, हरियाण